ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 24 कुल पृष्ठ-8 28 नवम्बर से 4 दिसम्बर, 2024 दयानन्दाब्द 200 सृष्टि सम्वत् 1960853125 सम्वत् 2081 आ. शु.-06

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में समारोह पूर्वक मनाया गया आर्य समाज टाण्डा का 133वाँ वार्षिकोत्सव

तीन वैदिक विद्वानों को 'वेदश्री' अलंकरण से किया गया विभूषित

विश्व की ज्वलन्त समस्याओं पर कार्य करे आर्य समाज – स्वामी आर्यवेश

जीवन का एक-एक क्षण आर्य समाज के लिए समर्पित है – आनन्द कुमार

महर्षि दयानन्द आधुनिक युग के महान दार्शनिक थे – डॉ. ज्वलन्त कुमार

वेद-वेदांग के अध्ययन से ही वैदिक सनातन धर्म की रक्षा हो सकती है – स्वामी चिदानन्द

आर्य समाज टाण्डा, अम्बेडकर नगर का 133वाँ वार्षिकोत्सव, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में कार्तिक शुदी द्वादशी से पूर्णिमा विक्रम सम्वत 2081 तद्नुसार, 12 से 15 नवम्बर, 2024 तक स्थानीय डी.ए.वी. एकेडमी टाण्डा परिसर में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस वार्षिकोत्सव में देश एवं विदेश के जाने-माने संन्यासी, उपदेशक, भजनोपदेशक, गुरुकुल की ब्रह्मचारिणी द्वय और प्रदेश के अनेक जनपदों से आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम में आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, वेद-वेदांग के मर्मज्ञ स्वामी चिदानन्द जी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, प्रखर व्याख्याता आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, वेद विदुषी डॉ. प्रीति विमर्शिनी, प्रसिद्ध भजनोपदेशक डॉ. कैलाश कर्मठ एवं आचार्य सत्यप्रकाश आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का शुभारंभ 12 नवम्बर, 2024 को प्रातः 7.30 बजे से चतुर्वेद शतकम् यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ ब्रह्मा के रूप में आचार्या 'वेद श्रीः' डॉ. प्रीती 'विमर्शिनी' (पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी) जी उपस्थित रहीं। मंत्र पाठ के लिए पाणिनि कन्या गुरुकुल वाराणसी की वेद पाठी छात्राओं की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। यज्ञ के पश्चात नई दिल्ली से पधारे "वेद श्रीः" स्वामी आर्यवेश जी के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात् आयोजन का विधिवत उद्घाटन किया गया।

अपराह्न 2 से 5 बजे तक मिश्री लाल आर्य कन्या इंटर कॉलेज, डी.ए.वी. एकेडमी टाण्डा, डी.वी.एम. इंग्लिश एकेडमी व आर्य कन्या महाविद्यालय टाण्डा के छात्र-छात्राओं, आर्य समाज टाण्डा व जनपद की अन्य आर्य समाजों के पदाधिकारियों व सदस्यों तथा स्त्री आर्य समाज टाण्डा की पदाधिकारियों एवं सदस्यों सहित आमंत्रित विद्वतजनों एवं भजनोपदेशकों ने नगर में अत्यंत भव्य शोभायात्रा निकाली। शोभा यात्रा के दौरान नगर के मुख्य चौराहे पर स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी व्याख्यान हुआ। इस अवसर पर इण्डियन मुस्लिम वेलफेयर एसोसिएशन के अधिकारियों एवं सदस्यों ने सभी विद्वानों का स्वागत किया।

सायंकालीन सत्र में डी.वी.एम. इंग्लिश एकेडमी टाण्डा के प्रधानाचार्य श्री चन्द्रेश यादव जी के संचालन में वैदिक आध्यात्म सम्मेलन विषय पर उपस्थित वैदिक विद्वानों ने अपने बहुमूल्य विचार रखे। तत्पश्चात कोलकाता से पधारे सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कैलाश चन्द्र 'कर्मठ' जी का सुमधुर भजनोपदेश हुआ।

13 नवम्बर, 2024 को प्रथम सत्र में यज्ञ, भजनोपदेश एवं आध्यात्मिक प्रवचन के पश्चात द्वितीय सत्र में आर्य समाज टाण्डा के मंत्री श्री योगेश कुमार आर्य जी के संचालन में वैदिक मान्यताओं पर आधारित शंका समाधान कार्यक्रम के अंतर्गत 'वेद श्रीः' डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री व वेदश्रीः पं० दीनानाथ शास्त्री जी सहित उपस्थित अन्य विद्वानों के द्वारा उपस्थित छात्र छात्राओं व सदस्यों की विभिन्न शंकाओं का समुचित समाधान किया गया। अपराह्न 1 बजे से आर्य कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अरुण कुमार आर्य जी के संचालन में युवा सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रबंधक श्री मनीष आर्य जी ने की। मुख्य वक्ता के रूप में युवा वैदिक विद्वान व इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृत प्राध्यापक डॉ. प्रचेतस शास्त्री जी की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही। 'मोबाइल/इंटरनेट – वरदान या अभिशाप' विषय पर संयोजित इस कार्यक्रम में अनेक युवा छात्र छात्राओं ने अपने विचार रखे और आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा एक मनोरंजक व ज्ञान वर्धक लघु नाटिका का मंचन भी किया गया।

सायंकालीन सत्र में वैदिक संस्कृति के उन्नायक (मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम एवं योगिराज श्री कृष्ण) विषय पर उपस्थित विद्वानों द्वारा सारगर्भित व उपयोगी उपदेश दिया गया।

14 नवम्बर, 2024 को प्रथम सत्र में यज्ञ, भजनोपदेश एवं आध्यात्मिक प्रवचन के पश्चात द्वितीय सत्र में अपराह्न 1 बजे से श्रीमती शशि कला जी (प्रधानाचार्या- मिश्री लाल आर्य कन्या इंटर कालेज, टाण्डा) एवं श्रीमती रुचि अग्रवाल (प्रधानाचार्या डी. ए. वी. एकेडमी) के सह-संयोजकत्व में "नारी शक्ति वंदन" सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता आचार्या वेद श्रीः डॉ. प्रीती 'विमर्शिनी' जी ने किया।

सायं 6 बजे श्रीमती मीना आर्या धर्मार्थ न्यास के तत्वावधान में विद्वत सम्मान समारोह

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयोगिता

– श्रीमती डॉ. कमल आनन्द

संस्कृत और संस्कार संस्कृति के संघटक हैं। किसी भी देश या राष्ट्र की जनभावना और जीवनक्रम के सुव्यवस्थित व सुरचित स्वरूप को उस राष्ट्र की संस्कृति कहते हैं। मनस्वी साहित्यकारों ने, चिन्तकों ने, राजनीतिज्ञों ने संस्कृति की विभिन्न परिभाषाएं दी हैं। श्री जवाहर लाल नेहरू ने कहा - मन और आत्मा की विशालता और व्यापकता को संस्कृति कहते हैं। काका कालेलकर संस्कृति को समाज की आत्मा मानते हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार संस्कृति मनुष्य की विविध साधनाओं की सर्वोत्तम परिणति है। अतः संस्कृति उस क्रिया समूह का नाम है जिसके द्वारा विभिन्न व्यक्ति मानवजाति के सृजनात्मक जीवन में भाग लेते और उसे समृद्ध करते हैं। सच्ची संस्कृति तो मस्तिष्क, हृदय और हाथ का अनुशासन है और यह अनुशासन भारतीय संस्कृति की पहचान रही है। हमारी संस्कृति संस्कृत से ही सम्भूत और पल्लवित हो कर जी रही है। कर्मनिष्ठा, विश्वबन्धुता, समन्वय आदि जीवनदायी तत्वों की संवाहिका संस्कृत भाषा है। आज इस वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयुक्तता और भी बढ़कर सामने आ रही है क्योंकि इसी के कारण हमारी संस्कृति इतिहास के अनेक विकट झंझावातों में जूझने के बाद भी अपने स्वत्व को अक्षुण्ण रखने में समर्थ रही है। संस्कृत जीवन प्रक्रिया की थाती है, गौरव है। मानवता के संरक्षण, परिवर्धन और परिष्कार के लिए जीवन की पाथेयभूता यह संस्कृत भाषा ही है।

आधुनिक वैश्वीकरण के युग में भी प्रोफेसर कार्डोना ने संस्कृत को डंहपबंस भाषा कहा है और इसके अध्ययन को आनन्द। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में संस्कृत की उपयुक्तता वर्णित है :-

निकला जहाँ से आधुनिक यह भिन्न भाषा तत्व है,
रखती न भाषा एक भी संस्कृत समान महत्त्व है।
पाणिनि सदृश वैय्याकरण संसार भर में कौन है?
इस प्रश्न का सर्वत्र उत्तर उत्तरोत्तर मौन है।।

विश्व संस्कृति के समग्र अध्ययन हेतु संस्कृत को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। इसमें हमारे जीवन दर्शन और चिन्तन के अक्षय स्रोत सुरक्षित हैं। यह विश्व की संजीविनी शक्ति है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः जैसी उदार परिकल्पना इसी का अवदान है।

वैश्वीकरण ने यन्त्र, संचार तथा अस्त्र-शस्त्रों के उत्पादन में विकास की ऊँचाइयों को छू लिया है परन्तु संस्कृति के क्षेत्र में हम पिछड़ गये हैं। शान्ति स्थापना में यू. एन. ओ. के प्रयास पर्याप्त सफल रहे हैं, परन्तु हम युद्ध और आतंक को समाप्त नहीं कर पाये। संचार व्यवस्था ने विश्व को एक छोटी इकाई में परिवर्तित कर, मानव को एक दूसरे के बहुत समीप कर दिया है। जल, स्थल और अन्तरिक्ष की दूरियाँ समाप्त प्राय हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को एक नया अर्थ प्रदान किया जा रहा है। वैश्वीकरण के इस दौर में पूरा विश्व एक परिवार है। केवल वाह्य परिप्रेक्ष्य में मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं की दृष्टि से नहीं। आज की स्थिति में यह वसुधा मात्र कुटुम्ब है जहाँ सामीप्य तो है सान्निध्य नहीं। सम्मिलन तो है, संवेदन नहीं। इस वैश्वीकरण का मानव सुखी परिवार की नींव, संविभाग, सान्निध्य, कुशल माङ्गल्य आदि से अनभिज्ञ है। उसे इन सब गुणों के पुनः परिभाषण की आवश्यकता है जिसमें संस्कृत की विशिष्ट भूमिका है।

संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित उसका विश्वबन्धुत्व कहीं खो गया है। भौतिकता ने उसे ग्रस लिया है और स्वार्थ परायणता का दंश उसे डस गया है। उसे उपनिषदों के 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' तथा 'मा गृधः कस्यस्विद् धनम्' के ऐक्यबोध की आवश्यकता है। संस्कृत एकता और समग्रता के स्वर भरती है सम्पूर्ण सांस्कृतिक जीवन की केन्द्रबिन्दु है। वर्तमान वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत साहित्य गति कराने वाला ऐसा मार्ग है जहाँ न कोई भटकन है और न कोई उलझन। इसका बहुक्षेत्रीय ज्ञान मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करने में सक्षम है। इसके कल्याण सम्पादक गुण 'बहुजनसुखाय' 'बहुजनहिताय' विश्वहित साधक है। ''संस्कृत साहित्य वह उच्च गिरिशृंङ्ग है जिस पर चढ़कर मनुष्य काल के सुदीर्घ स्रोत को बड़ी दूर तक देख सकता है।

आधुनिक वैश्वीकरण में पनपते, कलह-क्लेश, वैमनस्य और अशान्ति से व्याकुल मानव को शुभ संकल्प और सत्कर्म की आवश्यकता है। 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु का स्वरघोष ही उसे स्वस्थ परिवेश में सांस लेने योग्य बना सकता है। आधुनिक विज्ञान की प्रगति विध्वंसक न हो, इसीलिए उपनिषत्स्वरलहरी 'असतो मा सद्गमय', 'तमसो मा ज्योतिर्गमय', आज भी सामाजिकों का पथ प्रशस्त करती है। आज विपरीत आचरण करने से जड़ीभूत मन में संवेदनशीलता का प्रादुर्भाव करने वाले मूलमन्त्र 'मातृदेवौ भव', 'पितृदेवोभव' धर्मं चर, सत्यं वद आदि संस्कृति के भव्यरूप को संचारित करने में सर्वथा समर्थ हैं। वस्तुतः जगत हमारी चेतना का एक प्रक्षेपण ही तो है। वैदिक सिद्धान्तों की छत्रछाया में जिस अनुपात में हम अपने को सुधारेंगे, संसार उसी अनुपात में अधिकाधिक अच्छा बनता चला जायेगा। आवश्यकता चेतना की है, आवश्यकता एकता की है, आवश्यकता समन्वय की है। हमें कुछ तो बदलना होगा, अकेली गूंज से हटकर सहगान बनाना होगा, अन्धेरे से हटकर सूरज बन चमकना होगा, अवरोधों को खण्डित कर शीतल ब्यार बन बहना होगा। दुश्चरित से बचने और सच्चरित में संलग्न होने की वैदिक प्रार्थनायें 'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आ सुव' 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे' आज के वैश्वीकरण की अनिवार्यता है और यह संस्कृत साहित्य में ही निहित है।

भौतिकता की होड़ में हांफता मानव आज विश्वास, ईमानदारी, परिश्रम और सच्चाई से उठ सा गया है। अनैतिक साधनों से अपने उद्देश्य की पूर्ति उसकी आदत बन गई है। वैश्वीकरण के इस दौर में आदमी इन्सान बन जाये तो बहुत बड़ी बात है। एक शायर के शब्द याद आ रहे हैं :

क्या नजर लग गई जमाने को
कि अब कोई आँख नम नहीं होती।
टोकते सब हैं लड़खड़ाने को
कोई बैसाखियाँ नहीं बनता।।

पतन की ओर धंसते परिवेश में यह अनिवार्य हो गया है कि आज के पाठ्यक्रमों में संस्कृति की मूलभित्ति संस्कृत को अनिवार्य बनाया जाये। भर्तृहरि के नीतिवचन, वेदों की उदारता, सहकर्मिता, सहचिन्तन, उपनिषदों का संतुलन और गीता की स्थिरप्रज्ञता शिक्षण के अनिवार्य अंग होने चाहिए। व्यक्तिगत स्तर पर सांस्कृतिक मूल्यों के आधान से पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर एक स्वस्थ परिवेश बन पायेगा। एक नई दिशा मिलेगी। आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और आत्मशक्ति प्राप्त होगी। अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बनाये रखने में यह अनिवार्य है कि आज की सन्तान को संस्कृत से परिचित कराया जाये। संस्कृत जीवन विधि भी है और जीवन निधि भी। टी. वी. में दिखाये जाने वाले अधिकांश सीरियल संस्कृति को पछाड़ रहे हैं। 'राहुल दुल्हनिया ले जायेगा' सीरियल की लाखों के वस्त्राभूषणों से सजी दुल्हनें तो यह भी नहीं जानती कि रामायण और महाभारत के रचनाकार कौन हैं? कोई परशुराम कहती है तो कोई हनुमान। हिन्दू विवाह संस्कार के विविध कृत्य पाणिग्रहण, लाजाहोम, सप्तपदी आदि के वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधार को वे क्या जानेंगी?

आज विवाह विधि को छोड़ रहा है और आडम्बरों का शिकार होता जा रहा है। सप्तपदी के अतिशय महत्त्व का परिचायक सप्तपदीनं सख्यम् एक व्यापक लोक व्यवहार है। सख्य में सर्वदा समानता का भाव रहता है। इसमें गौरव का भी भाव रहता है श्थ्वतहमज दक वितहपअमश का भाव समरसता बनाये रखता है। पत्नी के प्रति इस प्रकार के उदात्तभाव संस्कृत की ही देन हैं। अधिकार और स्वतंत्रता के आधुनिक संघर्ष ने इस सख्यभाव को नष्ट प्राय सा कर दिया है। एकात्मकता के अभाव में दाम्पत्य क्षीण होकर सामाजिक समझौता मात्र रह गया है। वैदिक वैवाहिक मंत्रों से विदित होता है कि गार्हपत्य का यथावत् पालन अभ्युदय और निःश्रेयस का साधक माना जाता था। यह दाम्पत्य सम्बन्ध केवल शारीरिक भोगवादी सम्बन्ध नहीं अपितु वैचारिक और हार्दिक सम्बन्ध भी है जिससे सुगठित परिवार के माध्यम से सौहार्द्रपूर्ण समाज का निर्माण होता है।

आदर्शमय जीवन था तब पति पत्नी का
धन्य जिससे वेद का युग हो गया।
गृहस्थ का वो दिव्यतम कर्त्तव्य पथ
प्रेम और विश्वास में ही खो गया।।

इसी प्रेम, विश्वास और एकता में दम्पत्ती पुत्र-पुत्रियों, नाती-पोतों से खेलते हुए अपने ही घर संसार में आनन्दित होकर सारी आयु बिता देने की कामना करते हैं। सुमङ्गली, कल्याणदायिनी वधू को आशीर्वाद दिया जाता था कि पति के घर जाकर गृहस्वामिनी, बनकर दीर्घायु भोगे। वधू पति की सहधर्मिणी और जीवन-संगिनी के पद पर सुशोभित थी। सबको अपने स्नेह से अभिसिंचित करती सभी का स्नेहभाजन बन उनके हृदयों में सम्राज्ञी बन विराजती थी। परिवार के संयुक्त जीने की पद्धति में स्नेह था, त्याग था और पवित्रता का विशुद्ध वातावरण था, जो आज कहीं देखने को नहीं मिलता। आज की अस्त-व्यस्त और मस्त जीवन पद्धति में विवाह का यह शुद्ध-बुद्ध स्वरूप कहीं खो गया है। वैश्वीकरण के इस परिवेश में क्प्छज्ञ. क्नइसम प्दबवउम छव ज्ञपके नामक नई धारणा पनप रही है। अनेकत्व में एकत्व, समग्र जीवन का सानुपातिक विकास, व्यक्ति एवं समष्टि का सामंजस्य, अध्यात्मोन्मुखी जीवनदृष्टि आदि विशेषताएं समाज कल्याण की कसौटी रही हैं। इन उन्नायक तत्वों के अभाव में आज के समाज की नींव चरमरा गई है। आज की नारी जिस स्थिति के लिए प्रयत्नशील है उसकी परिपूर्ण कल्पना संस्कृत साहित्य में उपलब्ध है। वेदों की नारी सभी कार्य करने में समर्थ समाज के हर क्षेत्र में स्थान बनाने वाली एक विश्वस्त और आश्वस्त नारी है।

मातृभूमि व राष्ट्रभावना के सन्दर्भ में भी संस्कृत की उपयुक्तता प्रमाणित है। राष्ट्रैक्य और राष्ट्र सुरक्षा एक सामाजिक कर्त्तव्य हुआ करता था जहाँ वर-वधू को अपने राष्ट्र की समृद्धि करते हुए ही अपनी समृद्धि करते रहने का आशीर्वाद दिया जाता था। राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय समृद्धि का निर्मल भाव आज के वैश्वीकरण की आवश्यकता है। मन, चित्त और संकल्पों में समानता होने और तदर्थ प्रयत्न करने के उपदेश के साथ-साथ सभा-समितियों में भी सुसंवाद, परस्पर सुसंगति, समानता बनाये रखना, मिलकर चलना, मिलकर बोलना, सौमनस्य बनाये रखने का स्वर गुंजन सामाजिक कल्याण के सुर भरता है।

पहले पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्रविड़, उत्कल, बंग में बंटे भारत को पनुः मेघालय, नागालैण्ड, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड में बंटते हुए देश के लिए समग्र राष्ट्र को अपने घर के समान समझने, सुविधा और अभ्यासानुसार भाषा प्रयोग की स्वतंत्रता देने वाले उस वैदिक चिन्तन की आवश्यकता है जहाँ सब के संगठित होने तथा आपस में कोई द्वेषभाव न रखने की प्रार्थनाएँ नित्य-प्रति की सपर्या हुआ करती थीं। कामना करती हूँ कि इस वैश्वीकरण में राष्ट्रीयधर्म हमारे नेताओं को सद्विचार प्रदान करें ताकि भाषा व जातिभेद से ऊपर उठकर सर्वत्र एकात्मभाव के स्वर गूंज पायें।

राष्ट्रीय वैश्वीकरण के इस युग में आज पुनः उसी मधुर चिन्तन की, परिवारों के उल्लास व सौहार्द की आदर और आदर्श मिश्रित स्नेहिल परिवेश की आवश्यकता है।

दहेज के लोभ में वधुओं को जलाने वाले तथा कन्या-भ्रूण हत्या करने वाले परिवारों को यह बोध अनिवार्य है कि हमारी वैदिक संस्कृति में नारी पुरुष की सहयोगिनी और सहभागिनी थी। वह सम्राज्ञी बन अपने अधिकार और कर्त्तव्यों को निष्ठा से निभाती, आत्मविकास के पथ पर अग्रसर हो नागरिकता के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए सांस्कृतिक विकास द्वारा समाजसेवा में योगदान देती थी न कि कन्या-भ्रूण हत्या की पात्र बनती थी।

वैश्वीकरण के इस युग में यदि युवाओं को वैदिक जीवन पद्धति का बोध कराया जाये तो आज का सिसकता दाम्पत्य एक सुन्दर, सुवासित दाम्पत्यभाव का आनन्द ले सकेगा। कहीं कोई परिवार नहीं टूटेगा, कोई शिशु माँ-बाप से नहीं बिछुड़ेगा, कहीं कोई कन्या-भ्रूण हत्या न होगी और कहीं कोई युवती यौतुक दहन में नहीं झुलसेगी। पति-पत्नी समरस हो कर एक उज्ज्वल स्वस्थ परिवेश दे पायेंगे।

हमारा सांस्कृतिक न्यास संस्कृत भाषा में ही विन्यस्त है। हमारे समस्त धार्मिक व सांस्कृतिक कृत्य संस्कृत में ही सम्पन्न हैं। अतः संस्कृत से मन, वाणी और क्रिया को सुसंस्कृत करना होगा। आज वैश्वीकरण के युग में सभी अनुष्ठान औपचारिकता मात्र रह गये हैं। इनके प्रति शिथिलता और उदासीनता आज का फैशन है। बहुत बड़ी विडम्बना है कि आज का मानव इनकी वैज्ञानिकता से अनभिज्ञ है। इस स्थिति में संस्कृत की उपयुक्तता और भी बढ़ जाती है। हमारे विविध याज्ञिक आग्नेय अनुष्ठान केवल शरीर और मन को ही शुद्ध नहीं करते वे पर्यावरणीय शुद्धि में भी सहायक हैं। इन कृत्यों में किये जाने वाले मन्त्रोच्चारण से प्रसृत स्वर लहरियों से श्न्सजतं ैवदपब ॅअमे ज्तमंजउमदजश के समान रोगाणुओं को नष्ट करने की सामर्थ्य है। 'सह नाववतु सह नो भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै' का सहभागित्व ही आज के वैश्वीकरण की पुकार है।

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में संस्कृति के नैतिक, सामाजिक, दार्शनिक तथा राष्ट्रीय प्रसंग में संस्कृत की उपयुक्तता पूरे विश्व में है। विश्वशान्ति के लिये 'वसुधैव शेष पृष्ठ 7 पर

पंच महायज्ञ करने से स्वर्ग प्राप्त होता है

– खुशहाल चन्द्र आर्य

हमारे त्यागी, तपस्वी, विद्वान्, ऋषि मुनियों ने हर व्यक्ति को विशेष कर गृहस्थी को पांच महायज्ञ नित्य सुचारू रूप से करने का आदेश दिया है। इन पांच महायज्ञों से अनेकों लाभ तो है ही, पर विशेष लाभ यह है कि ये पांचों यज्ञ पांच किस्म के दुःखों व कष्टों को दूर करने वाले भी हैं। यानि इन यज्ञों से दुःखों व कष्टों का निराकरण होता है। वे पांच महायज्ञ हैं – (1) ब्रह्मयज्ञ (2) देवयज्ञ (3) पितृयज्ञ (4) बलिवैश्व देवयज्ञ (5) अतिथियज्ञ और कष्ट है आत्मिक, शारीरिक, पारिवारिक, प्राकृतिक तथा अज्ञान से बढ़ती दूरियाँ। पांच यज्ञों से पांच कष्ट कैसे दूर होते हैं, उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ देते हैं।

1. ब्रह्मयज्ञ :– ब्रह्मयज्ञ, आत्मा के दुःखों व कष्टों का निवारण करके, आनन्द की अनुभूति करवाता है। ब्रह्मयज्ञ का तात्पर्य है सन्ध्योपासना करना तथा वेद आदि धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना। मनुष्य को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना नित्य प्रातः व सायं करनी चाहिए। इससे आत्मा में आये विकार यानि ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, हिंसा आदि दोष नष्ट हो जाते हैं और उनकी जगह प्रेम, दया, करुणा, परोपकार की भावना व आनन्द का संचार होता है। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थनोपासना का तात्पर्य है कि हम किसी एक शान्त व स्वच्छ स्थान पर मनको सब ओर से हटाकर, एकाग्र चित्त से अपनी दृष्टि को बाहर से हटाकर अन्दर डालकर पहले तो हम ईश्वर की स्तुति यानि प्रशंसा करें कि हे ईश्वर! आप कितने सामर्थ्यवान् हो और किस प्रकार सृष्टि की रचना करके उसका संचालन व संहार भी आप ही करते हो और जीवों को उनके किये अच्छे व बुरे कर्मों का फल भी आप ही अपनी न्याय व्यवस्था से किस प्रकार देते हो यह ध्यान देना चाहिए। फिर अपने पूर्ण सामर्थ्य के बाद जो काम नहीं बनता हो उसकी सफलता पाने के लिए और अधिक सामर्थ्य पाने की ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। फिर उसके पास बैठ कर अपने अवगुणों व दोषों का ध्यान करना चाहिए और ईश्वर के गुणों का स्मरण करते हुए अपने दोषों को छोड़ना और ईश्वर के गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य ब्रह्मयज्ञ से अपने दुर्गुणों को छोड़ता है और ईश्वर के गुण दया, करूणा व परोपकार की भावना से जुड़ता हुआ अपने जीवन को पवित्र बनाता है। ब्रह्मयज्ञ में सन्ध्योपासना के साथ–साथ वेदों तथा धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना भी आता है जिससे मनुष्य अपने ज्ञान को बढ़ाता है और वेदों के अनुसार चल कर मोक्ष की तरफ अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है, जिसको पाने के लिए जीव अच्छे कर्म करते हुए मनुष्य योनि में आता है।

2. देवयज्ञ :– यह महायज्ञ मनुष्य के शरीर से सम्बन्ध रखता है। देवयज्ञ का तात्पर्य है, हवन करके सब जड़ देवों को प्रसन्न करना होता है। विश्व में पांच जड़ देवता है, जिनके नाम हैं, जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश। इन पांचों जड़ देवताओं का अग्नि मुख है। जिस प्रकार हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मुख से भोजन करते हैं और उस भोजन का पेट में जाकर रस, रक्त आदि बनकर पूरे शरीर में जाता है और पूरे शरीर की कमियों की पूर्ति करता है, तब मनुष्य स्वस्थ रह पाता है। यही काम यज्ञ का है। वह भी अग्नि में जो घृत, सामग्री व समिधा आदि डाली जाती है। उसके गुण अग्नि में डालने से हजार गुणा बढ़ जाते है और वह सुगन्ध जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी व आकाश में फैल कर सबको सुगन्धित कर देती है जिससे सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र हो जाता है। ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है जो जीव के लिए लाभदायक है। हाईड्रोजन व नाईट्रोजन गैस कम हो जाती है जिससे मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है यानि शरीर में जो रोग व बीमारियाँ रहती हैं, वे दूर जाती हैं और शरीर स्वस्थ हो जाने से मनुष्य का जीवन सुखी व आनन्दित बन जाता है। इस प्रकार देवयज्ञ से शरीर के कष्ट दूर हो जाते हैं।

3. पितृयज्ञ :– पितृयज्ञ से परिवार व गृहस्थ सुखी बनता है। जिस घर में पितर जनों का आदर व सम्मान होगा तथा उनकी सभी आवश्यकताएँ पूर्ण होगी तो उनके आशीर्वाद और उनके अनुभवों का लाभ उस परिवार को मिलेगा जिससे वह परिवार भी सुखी बना रहेगा। हमारे पौराणिक भाई मरे हुओं का श्राद्ध व तर्पण करते हैं, परन्तु वेद हमें मरे हुए पितरों का श्राद्ध व तर्पण करना नहीं सिखाता बल्कि जीवित माता–पिता व वृद्धजनों की श्रद्धापूर्वक सेवा, सुश्रूषा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न रखना सिखाता है। जिसको श्राद्ध कहते हैं। अपने स्वभाव व व्यवहार से बड़ों के मन को तृप्त रखना ही तर्पण कहलाता है जो जीवितों का ही कर पाना सम्भव है। मरने के बाद करना एक अन्धविश्वास ही है।

4. बलिवैश्वदेव यज्ञ :– इस यज्ञ से सब जीवों को प्रसन्न रखना है। जो भूखा है उसको भोजन देना, जो प्यासा है उसको जल देना। जो असहाय है उसकी सहायता करना। जो जीव हम पर आश्रित है उसकी रक्षा करना ही बलिवैश्व देवयज्ञ है। इस यज्ञ में जीव हिंसा का कोई स्थान नहीं है। जब सब जीव प्रसन्न रहेंगे तो प्रकृति भी शान्त रहेगी उसमें किसी प्रकार का प्रकोप नहीं होगा और सब जगह शान्ति बनी रहेगी।

5. अतिथि यज्ञ :– घरों में अज्ञानता से जो वैमनस्य बना रहता है, आपस में वैरभाव रहता है और परस्पर लड़ते–झगड़ते रहते हैं, अतिथि यज्ञ से ये सब समाप्त हो जाते हैं। अतिथि यज्ञ का तात्पर्य यह है कि गृहस्थियों के घर पर साधु, सन्त, संन्यासी, विद्वान्, वानप्रस्थी व गुरुकुलों के आचार्यों व ब्रह्मचारियों का आना–जाना बना रहना। जिस गृहस्थ में संन्यासी, वानप्रस्थी व विद्वानों का आदर सत्कार होगा, उनके घरों में प्रवचन होंगे, उपदेश होंगे तो उस घर में परस्पर का विरोध व कटुता कभी भी नहीं रहेगी, कारण परस्पर का विरोध व कटुता अज्ञान से उत्पन्न होती है। जब संन्यासियों और विद्वानों के सद्उपदेश जिस घर में होंगे उस घर से अज्ञानता दूर हो जायेगी और परस्पर का प्रेम व सहृदयता का वातावरण बन जायेगा, तब पति–पत्नी, सास–बहू, भाई–भाई का झगड़ा कभी नहीं होगा और वह घर परस्पर के शुद्ध व्यवहार से स्वर्ग के समान बन जायेगा। इस प्रकार इन पांच महायज्ञों से ऊपर लिखे इन पांच दुःखों व कष्टों की निवृत्ति होती है। इसलिए हर व्यक्ति को विशेष कर हर गृहस्थी को अपना जीवन व गृहस्थ को सुखी बनाने के लिए ये पांच महायज्ञ अवश्य करने चाहिए।

इस लेख को लिखने के भाव मेरे मन में तब जगे जब आर्य समाज बड़ा बाजार का वेद सप्ताह यानि श्रावणी उपाक्रम जो 23 से 29 अगस्त, 2015 तक मनाया गया था। उसी के प्रथम दिन प्रातः के सत्र में पूज्य आचार्य ब्रह्मदत्त जी का प्रवचन इसी विषय पर हुआ था। वह प्रवचन मुझे बहुत ही अच्छा लगा, इसलिए इसका लाभ अन्य विज्ञ पाठकजन भी उठा सकें। इस भावना से प्रेरित होकर मैंने यह लेख लिखा है। आशा है इसका अधिक से अधिक लाभ पाठकगण उठायेंगे।

– द्वारा गोविन्द राम आर्य एण्ड संस
180, महात्मा गांधी रोड, (2 तल्ला),
कोलकाता–700007, मो.:–9830135794

महर्षिदयानन्दस्य संस्कारविधौ नारीणां स्थितिः

– डॉ. मनुदेवबन्धुः, आचार्य वेदविभाग

प्रस्तावना

आर्यसमाजस्य संस्थापकः महर्षिदयानन्दः वेदोद्धारकः, राष्ट्रभक्तः,आर्यजातिसमुद्धारकः, संस्कृतभाषायाः प्रबलपोषकः, कुरीतिनिवारकः, पाखण्डखण्डकः, वेदभाष्यकारकः नारीणां कल्याणकारकश्चासीत्। यत्र महर्षिदयानन्दः वेदभाष्यं कृतवान्, तत्रैव सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका संस्कारविधि आर्याभिविनय वर्णोच्चारणशिक्षा व्यवहारभानु गोकरुणानिधि पञ्च महायज्ञ विधि आदीनां ग्रन्थाना प्रणेतापि आसीत्। वेदस्य माहात्म्यं व्याकुर्वन्दयान्दो लिखति –

'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।'

अमर ग्रन्थे सत्यार्थप्रकाशे मातृगुणान् व्याख्यापयन् दयानन्दो लिखति – **'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।'** यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे, तभी मनुष्य ज्ञनवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है, उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए (मातृमान्) अर्थात् **'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्।'** धन्य वह माता हैकि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।'

गर्भाधानसंस्कारप्रसंगे –

संस्कारविधेः गर्भाधानसंस्कारप्रसंगे नारीणां महिमानं विशिनष्टि दयानन्दः – 'गर्भाधान उसको कहते हैं कि जो – **'गर्भस्याधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं यस्मिन् येन वा कर्मणा तद् गर्भाधानम्।'** गर्भ का धारण अर्थात् वीर्य का स्थापन, गर्भाशय में स्थिर करना जिस क्रियासे होता है, उसी को गर्भाधान संस्कार कहते हैं। जैसे बीज और क्षेत्र के उत्तम होने से अन्नादि पदार्थ भी उत्तम होते हैं, वैसे उत्तम बलवान् स्त्री–पुरुषों से सन्तान भी उत्तम होते हैं। इससे पूर्ण युवावस्था यथावत् ब्रह्मचर्य का पालन और विद्याभ्यास करके अर्थात् न्यून से न्यून सोलह वर्ष की कन्या और पच्चीस वर्ष का पुरुष अवश्य हो और इससे अधिक वय वाले होने से अधिक उत्तमता होती है।क्योकि बिना सोलहवें वर्ष के गर्भाशय में बालक के शरीर को यथावत् बढ़ने के लिए अवकाश उपयुक्त और स्त्री के शरीर में गर्भ के धारण–पोषण का सामर्थ्य भी नहीं होता और पच्चीस वर्ष के बिना पुरुष का वीर्य भी उत्तम नहीं होता।

पुंसवनसंस्कारप्रसंगे –

महर्षिदयानन्दः पुंसवनसंस्कारप्रसंगे नारीणामारोग्यं स्वास्थ्यं सुसमीचीनं भवेत्, भोजनादिकं बलकारि भवेदिति प्रदर्शयन् लिखित – 'इसके पश्चात् स्त्री सुनियम युक्ताहार विहार करे। विशेषकर गिलोय, ब्राह्मी ओषधि और सूंठ (शुण्ठी) को दूध के साथ थोड़ी–थोड़ी खाया करे और अधिक शयन और अधिक भाषण, अधिक खारा, खट्टा, तीखा, कड़वा, रेचक, हरड़ आदि न खावे, सूक्ष्म आहार करे। क्रोध, द्वेष, लोभादि दोषों में न फंसे, चित्त को सदा प्रसन्न रखे, इत्यादि शुभाचरण करे।'

सीमन्तोन्नयनसंस्कारप्रसंगे –

सीमन्तोन्नयनसंस्कारः पूर्णरूपेण गर्भिणी स्त्रीणां कल्याणाय क्रियते। दयानन्दो लिखति – 'अब तीसरा संस्कार सीमन्तोन्नयन कहते हैं, जिससे गर्भिणी स्त्री का मन सन्तुष्ट, आरोग्य, गर्भस्थिर, उत्कृष्ट होवे और प्रतिदिन बढ़ता जावे।'

विष्णोः श्रेष्ठेन रूपेणास्यां नार्यां गवीन्याम्।
पुमांसं पुत्रानाधेहि दशमे मासि सूतवे स्वाहा॥

विष्णोः सर्वव्यापकस्य परमेश्वरस्य श्रेष्ठेन रूपेण सौन्दर्यपूर्णरूपेण अस्यां गवीन्यां गोसदृश्यां नार्यां पुमांसं बलवन्तं रोग रहितं पुत्रम् आधेहि। हे विष्णो! दशमे मासे इमां नारीं मदीयां पत्नीं सर्वगुणसम्पन्नस्य सन्तानस्य जननीं निर्मापय। अग्रे लिखति दयानन्दः – **'किं पश्यसि? प्रजां पश्यामि।'** येन–केन प्रकारेण प्रजा भवेदेव। सीमन्तोन्नयन संस्कारस्य समापन प्रसंगे महर्षिदयानन्दो लिखति –

'तत्पश्चात् एकान्त में वृद्ध कुलीन और सौभाग्यवती, पुत्रवती गर्भिणी अपने कुल की और ब्राह्मणों की स्त्रियाँ बैठें, प्रसन्न वदन और प्रसन्नता की बातें करें और वह गर्भिणी स्त्री उस खिचड़ी को खावे और वे वृद्ध समीप बैठी हुई उत्तम स्त्री लोग आशीर्वाद देवें।

ओ३म् वीरसूस्त्वं भव, जीवसूस्त्वं भव, जीवपत्नी त्वं भव।

हे नारि! त्वं वीरपुत्राणामुत्पादयित्री भव। हे स्त्री! त्वं जीवनशीलानामायुष्यमतां सन्तानानां जननी भव। हे पत्नी! त्वं जीवनशीलस्यायुष्मतः पत्युः पत्नी भव। त्वमेव समस्तपरिवारस्य कल्याणकर्त्री असि। त्वमेव सम्पूर्ण परिवारस्य पालयित्री असि। त्वमेव अन्नपूर्णा असि।

जातकर्मसंस्कारप्रसंगे –

जातकर्मसंस्कारः जातस्य जन्मप्राप्तस्य पुत्रस्य पुत्र्याः वा भवति। अमुस्मिन् संस्कार पुत्रस्य कल्याणाय आयुर्विद्या बल बर्धनाय पिता कर्मकाण्डं करोति, भगवन्तञ्च प्रार्थयति।

ओ३म् इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः।
सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान्वीरवतोऽकरत्॥

हे स्त्री! त्वं इडा स्तुत्या असि। त्वं मैत्रावरुणी असि। त्वं मैत्री सम्बन्धयोग्या असि। त्वं वरयितव्या असि। त्वं वीरपुत्रं वीराङ्गना पुत्रीं वोत्पादयित्री असि। त्वं स्वयमेवापि वीरवती भव। वीरता युक्तानि साहसिकानि कार्याणि कुरु। त्वं नारी असि। त्वमस्मानपि वीरान् भावय, निर्माय। दयानन्दो लिखति –

'इस मन्त्र में ईश्वर की प्रार्थना करके प्रसूता स्त्री को प्रसन्न करके पश्चात् स्त्री के दोनों स्तन किञ्चित् उष्ण सुगन्धित जल से प्रक्षालन कर पोंछ के..... बालक के मुख में देवें।'

परन्तु अद्यत्वे अत्याधुनिकाः नार्यः स्वदुग्धं न धापयन्ति, न पाययन्ति। परन्तु दयानन्दो लिखति सद्यो जाता माता यत् सद्यो जातं पुत्रं स्वकीयं स्तनस्थं दुग्धं स्तनन्धयमवश्यं पाययतु।

अद्यापि सुपरीक्षितमेतद् यत् माता यदि स्वकीयं पीतवर्णं स्वर्णिम वर्णं दुग्धं पाययति, तदा सन्तानं स्वस्थम्आयुष्मद् बलवद् विद्वांश्च भवति।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज के 83वें जन्म दिवस पर यमुनानगर (हरियाणा) में विशाल आर्य महासम्मेलन समारोह पूर्वक हुआ आयोजित

हरियाणा के प्रत्येक जिले में होंगे आर्य सम्मेलन – स्वामी आर्यवेश

आगामी एक वर्ष में 10 हजार युवाओं को आर्य समाज से जोड़ा जायेगा – स्वामी आदित्यवेश

राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान आर्य समाज के पास है – लाजपत राय चौधरी

महर्षि दयानन्द महान् समाज सुधारक एवं मार्ग दर्शक थे – घश्यामदास अरोड़ा

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में तथा पूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी के 83वें जन्म दिवस के अवसर पर गत् 23 व 24 नवम्बर, 2024 को वैदिक ज्ञान आश्रम, वर्कशॉप रोड, यमुनानगर के तत्वावधान में विशाल आर्य महासम्मेलन भव्यता के साथ आयोजित किया गया। इस पूरे आयोजन की अध्यक्षता आश्रम के संरक्षक स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा इसके मुख्य वक्ता तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी रहे।

23 नवम्बर को प्रातः 9 से 10 बजे तक वैदिक विद्वान् आचार्य धर्मेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ के द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। तत्पश्चात् विशाल शोभा यात्रा का शुभारम्भ स्थानीय विधायक श्री घनश्याम दास अरोड़ा ने ओ३म् की पताका के साथ किया।

शोभा यात्रा में आर्यजनों के अतिरिक्त ज्ञान दीप गुरुकुल सरसावा व गुरुकुल उग्रपुर (सहारनपुर) एवं विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं ने उत्साह के साथ भाग लिया। लगभग 5 किलोमीटर की दूरी तय करके यमुनानगर में महर्षि दयानन्द की जय के नारे गुंजाते हुए शोभा यात्रा वैदिक ज्ञान आश्रम, अशोक नगर, वर्कशॉप रोड से प्रारम्भ होकर आर्य समाज मॉडल कालोनी में सम्पन्न हुई। बीच में अनेक स्थानों पर शोभा यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। लोगों ने फूल–मालाओं से स्वामी आर्यवेश जी एवं अन्य सभी संन्यासियों एवं आर्य नेताओं को लाद दिया। वहीं शोभा यात्रा में सम्मिलित सभी आर्यजनों पर फूल बरसाये गये। कई स्थानों पर फल एवं प्रसाद वितरित कर लोगों ने अपने श्रद्धा भाव व्यक्त किये। शोभा यात्रा में गुरुकुल सरसावा के ब्रह्मचारियों ने आश्चर्यजनक व्यायाम प्रदर्शन करके नगरवासियों को अचम्भित कर दिया। ऐसी शोभा यात्रा पिछले 20 वर्ष तक शायद ही निकाली गई हो। बाजारों में लोगों की

प्रतिक्रिया यही सुनने को मिल रही थी कि आर्य समाज की शोभा यात्रा बहुत लम्बे समय के बाद इतनी प्रभावशाली देखने को मिल रही है।

सायंकाल 6 से 9 बजे तक आर्य समाज वर्कशॉप रोड, जगाधरी के विशाल सभागार में भजनों एवं व्याख्यान का कार्यक्रम चला। सहारनपुर से पधारे आर्य सुखपाल विश्वकर्मा आर्य भजनोपदेशक एवं युवा संन्यासी स्वामी मुक्तिवेश जी के ओजस्वी भजनों का शानदार कार्यक्रम रहा। श्री देशबन्धु आर्य ने भी अपना एक भजन प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का लगभग एक घण्टे का वेद एवं वैदिक मान्यताओं पर सारगर्भित व्याख्यान हुआ जिसे श्रोताओं ने एकाग्रचित होकर सुना। कार्यक्रम का संयोजन वैदिक ज्ञान आश्रम की मंत्री श्रीमती नीरज नरूला ने किया। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि इस सम्पूर्ण आयोजन में जहाँ यमुनानगर तथा जगाधरी की समस्त आर्य समाजों का विशेष सहयोग रहा वहीं वैदिक ज्ञान आश्रम के प्रधान आर्य श्री सत्यवीर कम्बोज, श्री धर्मपाल आर्य, कोषाध्यक्ष श्रीमती तारावती सैनी, मंत्री श्रीमती नीरज नरूला, श्रीमती पूनम सचदेवा, श्रीमती ज्योति शर्मा, श्री संजीव नरूला, श्री दीपक कुमार शर्मा, श्री रामपाल प्रधान एवं श्री बृजेश मंत्री आर्य समाज वर्कशॉप कालोनी, जगाधरी, यमुनानगर आदि का पुरुषार्थ एवं योगदान प्रसंशनीय रहा। इस पूरे कार्यक्रम के संयोजन एवं संचालन में श्री संजय चौधरी (आर्य समाज मॉडल कालोनी), श्री राकेश ग्रोवर आर्य समाज बूड़िया, श्री जितेन्द्र चण्डोक, श्री यश वर्मा आर्य समाज मॉडल टाऊन आदि का भी विशेष सहयोग रहा।

24 नवम्बर को प्रातः 10 बजे यज्ञ की पूर्णाहुति की गई। इस अवसर पर मुख्य यजमान के रूप में श्री अशोक नरूला सपत्नीक गुरुग्राम से पधारे तथा यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ के उपरान्त विधिवत रूप से कार्यक्रम सभागार में प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम का संचालन बहन नीरज नरूला ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी, श्री लाजपत राय चौधरी संरक्षक आर्य केन्द्रीय सभा करनाल, श्रीमती सावित्री नन्दवानी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा करनाल, श्री सूर्य पाल शास्त्री, श्री राम निवास गुणग्राहक व आचार्य विपिन शास्त्री आदि के व्याख्यान एवं आर्य सुखपाल विश्वकर्मा तथा स्वामी मुक्तिवेश जी एवं श्रीमती सुदेश आर्या के भजनों का विशेष कार्यक्रम रहा। कार्यक्रम में आर्य महासम्मेलन में विशेष सहयोग देने वाले महानुभावों का अंग वस्त्र प्रदान कर सम्मान किया गया। मुख्य रूप से श्री चन्द्रमोहन, श्री देश भूषण एवं श्रीमती यश प्रभा (दिल्ली), पं. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री, श्री विनोद भसीन, श्री रविन्द्र पाहुजा प्रधान आर्य समाज मॉडल टाऊन, माता प्रेमलता, श्री सचिन व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनैना आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

अपने अध्यक्षीय एवं समापन भाषण में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि पूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज का यह संकल्प था कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में वैदिक ज्ञान आश्रम की ओर से विशाल कार्यक्रम किया जायेगा किन्तु विधि की व्यवस्था कुछ और ही थी और स्वामी जी अपने संकल्प को हम सबके लिए छोड़कर गत् वर्ष संसार से विदा हो गए। हम सबका यह कर्त्तव्य था कि हम उस महान् संन्यासी के संकल्प को अवश्य ही पूरा करें, इसी को दृष्टिगत रखते हुए यह आर्य महासम्मेलन आयोजित किया

गया और जो योजना पूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज ने बनाई थी उसी रूप में सभी व्यवस्थाएं करने की भरसक कोशिश की गई। ईश्वर की महान् कृपा से स्वामी जी के संकल्प के अनुरूप यह दो दिवसीय आर्य महासम्मेलन सफलता के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। यह हम सभी की स्वामी सच्चिदानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि है। अब हम यह प्रयास करेंगे कि प्रतिवर्ष वैदिक ज्ञान आश्रम के माध्यम से इस प्रकार के आयोजनों को पूरी तैयारी एवं पुरुषार्थ के साथ करते रहें और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य जारी रखें। स्वामी आर्यवेश जी ने इस पूरे आयोजन की सफलता के लिए जहाँ सभी आर्य समाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया वहीं बहन नीरज नरूला एवं उनके पति श्री संजीव नरूला तथा सम्पूर्ण नरूला परिवार श्री संजय चौधरी व उनके अन्य सभी साथी श्री सत्यवीर कम्बोज, श्री धर्मपाल, श्री दीपक शर्मा, माता तारावती सैनी, श्रीमती पूनम सचदेवा व श्रीमती ज्योति शर्मा, श्रीमती सुकीर्ति व श्रीमती तृप्ता जेटली आदि के विशेष प्रयास एवं पुरुषार्थ के लिए उन्हें जहाँ साधुवाद प्रदान किया वहीं मुक्त कंठ से प्रशंसा की। स्वामी जी ने आर्यजनों से अपील की भविष्य में आर्य समाज का जो भी कार्यक्रम आयोजित किया जाये उसमें हम सभी अपना योगदान देकर उसे सफल बनाने के लिए कृत–संकल्पित हों। इसी से आर्य समाज की शक्ति बढ़ती जायेगी और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा की विजय होगी।

इस अवसर पर बहन नीरल नरूला का उपस्थित सभी महिलाओं ने माल्यार्पण कर जोरदार अभिनन्दन किया तथा उन्हें कार्यक्रम की सफलता के लिए बधाई दी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज बरनाला (गुरदासपुर) पंजाब की अर्द्धशताब्दी के अवसर पर विशाल आर्य महासम्मेलन हुआ भव्यता के साथ सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, स्वामी वेद प्रकाश जी एवं श्री ओम प्रकाश आर्य की रही गरिमामयी उपस्थिति

स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में विशाल शोभायात्रा का आयोजन

स्वामी वेद प्रकाश जी के ब्रह्मत्व एवं श्री तरसेम लाल जी के संयोजन में सात दिवसीय यज्ञ एवं वेद प्रचार की रही धूम

51 कुण्डीय यज्ञ से हुआ आर्य महासम्मेलन का शुभारम्भ

महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज बरनाला (गुरदासपुर), पंजाब की अर्द्धशताब्दी के उपलक्ष्य में गत् 8, 9 व 10 नवम्बर, 2024 को विशाल आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर सात दिन तक विभिन्न स्थानों एवं परिवारों में यज्ञ एवं वेद प्रचार का प्रभावशाली कार्यक्रम स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती के ब्रह्मत्व एवं आर्य समाज के मंत्री श्री तरसेम लाल आर्य जी के संयोजन में धूमधाम के साथ चलता रहा। 8 नवम्बर, 2024 को गुरदासपुर शहर में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जिसका नेतृत्व स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी ने किया। शोभा यात्रा का स्थान–स्थान पर नगरवासियों ने फूल बरसाकर एवं जलपान की व्यवस्था के साथ स्वागत किया।

10 नवम्बर, 2024 को आर्य महासम्मेलन का शुभारम्भ प्रातः 8 से 10 बजे तक 51 कुण्डीय यज्ञ के द्वारा किया गया। यज्ञ में 200 यजमानों ने सपरिवार सम्मिलित होकर आहुतियाँ प्रदान की और विशेष संकल्प किये। आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा इसके मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य जी रहे। कार्यक्रम में स्वामी आदित्यवेश जी का ओजस्वी व्याख्यान श्रोताओं ने मन्त्रमुग्ध होकर सुना और अनेक नौजवान आर्य समाज में सक्रिय योगदान के लिए आगे आये।

श्री ओम प्रकाश आर्य ने अपने उद्‌बोधन में समाज में व्याप्त विविध कुरीतियों के विरुद्ध जोरदार अभियान चलाने का आह्‌वान किया तथा आर्य समाज बरनाला के सभी कार्यकर्ताओं को बधाई दी।

लुधियाना से पधारे युवा विद्वान् श्री राजेन्द्र व्रत शास्त्री ने जोशीले गीतों से कार्यक्रम में समा बांध दिया, उनके अतिरिक्त आर्य समाज के पुरोहित श्री हितेश गुलशन उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सोनिया गुलशन व उनकी अन्य सहयोगी महिलाओं ने भी गीत प्रस्तुत किये। पंजाब के प्रसिद्ध लोक गायक श्री अमरीक सिंह (जग्गी ठाकुर) के देश भक्ति से ओत–प्रोत गीतों की गूंज पूरे आकाश में बनी रही।

अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी आर्यवेश जी ने जहां आर्य समाज बरनाला के समस्त पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों को अपनी शुभकामनाएं एवं बधाई देकर उत्साहित किया, वहीं उन्होंने आर्य समाज की स्थापना में जिनकी विशेष प्रेरणा रही ऐसे आर्य समाज के महाधन स्व. श्री वेद प्रकाश आर्य एवं अन्य बुजुर्ग आर्य नेताओं को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। स्वामी जी ने कहा कि आर्या समाज बरनाला पूरे पंजाब में एक उदाहरण के रूप में चर्चित है। पंजाब के शहरों में आर्य समाज के बड़े–बड़े भवन हैं। किन्तु आर्य समाज बरनाला के पास शानदार सत्संग भवन, यज्ञशाला, अतिथिशाला आदि के अतिरिक्त कर्मठ एवं समर्पित कार्यकर्ताओं की एक बड़ी श्रृंखला भी है। ग्राम–बरनाला के सैकड़ों घरों में प्रतिवर्ष यज्ञ किया जाता है और वे लोग आर्य समाज को दिल खोलकर सहयोग करते हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने आह्‌वान किया कि आर्य समाज बरनाला की तरह से पंजाब के सभी जिलों में गांव तथा मोहल्लों तक नई आर्य समाजों की स्थापनाएं की जायें। नव–युवकों को तथा महिलाओं को विशेष रूप से आर्य समाज में लाया जाये और दलित परिवारों में विशेष रूप से महर्षि दयानन्द के विचारों को पहुँचाया जाये। उन्हें गले से लगाया जाये, यदि ये सब कार्य हम लोग कर सके तो महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती मनाने का हमारा आयोजन सफल एवं सार्थक होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने समाज में व्याप्त जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी एवं अश्लीलता जैसी ज्वलन्त समस्याओं के प्रति लोगों को सचेत करते हुए कहा कि यदि हम सभी ने मिलकर इन समस्याओं के समाधान के लिए प्रयत्न नहीं किया तो हमारे राष्ट्र का भविष्य अन्धकारमय होगा।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री अरविन्द मेहता उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधुर भाषिणी मेहता, श्री भारत भूषण जगयालिया, श्री विकास आर्य, श्री विजय कांसरा, श्री संजीव वासुदेवा–आर.एस. इलेक्ट्रानिक्स, प्रो. केवल कृष्ण (अवाखां) महामंत्री जिला आर्य सभा गुरदासपुर, श्री जितेन्द्र त्रेहन–गुरदासपुर आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। आर्य महासम्मेलन की सफलता में जिन महानुभावों का विशेष योगदान रहा उनमें मुख्य रूप से श्री यशपाल सिंह प्रधान, श्री तरसेम लाल आर्य मंत्री, श्री रमेश चन्द्र कोषाध्यक्ष, श्री सुशील कुमार प्रेस सचिव, श्री श्रवण कुमार उपमंत्री, श्री अमरीक सिंह जग्गी उपमंत्री, श्री गुरदयाल सिंह लेखानिरीक्षक एवं श्री गुरदित सिंह, श्री दिलावर सिंह व श्री सतपाल फौजी (सभी संरक्षक) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

शोभा यात्रा एवं व्यवस्था के कार्य में प्रमुख रूप से श्री विजय कुमार चाण्डल, श्री रवि कुमार, श्री सक्षम जग्गी, श्री पंकज डोगरा, श्री राहुल कुमार, श्री अक्षित जग्गी, श्री कार्ति आर्य, श्री तेजस वीरसिंह, श्री अंशू कुमार, श्री सावन कुमार आदि का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

सात दिवसीय वेद प्रचार एवं यज्ञ की व्यवस्था में संयोजक का दायित्व श्रीमती राजकुमारी आर्या, श्रीमती सोनिया गुलशन, श्रीमती कान्ता रानी, श्री रविन्द्र पाल रिषु, श्री श्यामलाल, श्री रमेश पाल आदि की विशेष भूमिका रही। वेद प्रचार के कार्य में श्री अजय कुमार अवाखां, कुमारी मिताली गुलशन व श्री अमरीक सिंह जग्गी के भजनों का कार्यक्रम भी विशेष रूप से चलता रहा। आर्य महासम्मेलन में ध्वजारोहण श्रीमती अजीत कुमारी जी सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या एवं श्री आर.एस. कलारिया सेवानिवृत्त डी.जी.एम पंजाब नेशनल बैंक ने किया। ज्योति प्रज्जवलन में मुख्य रूप से सरदार कमलजीत सिंह जी, सरदार हरजीत सिंह जी, सरदार महेन्द्र सिंह जी आदि प्रमुख रहे।

श्री राकेश कुमार काठिया एडवोकेट के संयोजन में आर्य समाज रमदास से अच्छी संख्या में लोग कार्यक्रम में पधारे। इसी प्रकार अमृतसर से श्री ओम प्रकाश आर्य जी की प्रेरणा से श्रीमती सुलोचना आर्या के संयोजन में लगभग 60 आर्यजनों का समूह उत्साह के साथ सम्मेलन में पहुंचा। इसी प्रकार धारीवाल, गुरदासपुर, जालन्धर, नवांशहर आदि स्थानों से भी आर्यजन कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक एवं आर्य समाज के मंत्री श्री तरसेम लाल आर्य ने अथक परिश्रम के साथ अपने सभी सहयोगियों को साथ लेकर इस आर्य महासम्मेलन को ऐतिहासिक पहचान देने का कार्य किया। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह एवं भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

आध्यात्मिकता से परिपूर्ण जीवन जीने के सूत्र

– हरिकृष्ण आर्य

1. संन्ध्या उपासना :– आध्यात्मिक जीवन से अभिप्राय है कि अपने आत्मा व परमात्मा पर पूर्ण विश्वास रखते हुए अपना जीवन चलाना। मैं जड़ शरीर नहीं हूँ, मैं चेतन आत्मा हूँ, जिसने अपने बचपन को भी देखा, युवावस्था को भी और वृद्धावस्था भी देख रहा है। यह जड़ शरीर तो एक दिन जला दिया जायेगा परन्तु मैं नहीं समाप्त होऊँगा, अपनी अगली यात्रा पर निकल जाऊँगा। ऐसा विचार कर जीवन में आत्मा को मुख्य और शरीर व मन को गौण समझकर आचरण करना और परमपिता परमात्मा को दोनों का अधिष्ठाता व नियंत्रक मानकर जीवन जीना आध्यात्मिक जीवन है। परमात्मा मेरा पिता व मैं उसका पुत्र हूँ। अमृतपुत्र। हर क्षेत्र में मेरा वह पिता मुझसे अधिक हितैषी है। अतः मैं हर समय उस परमपिता को याद रखूं और प्रातः सायं तो विशेष रूप से संन्ध्या, वन्दन, उपासना, आराधना, उसका स्मरण भजन करूं। सदा अपनी आत्मा की आवाज को सुनूं और मानूं, अपनी मनमानी न करूं। इस प्रकार का आध्यात्मिक जीवन जीने से आत्मिक आनन्द व आत्मिक उन्नति प्राप्त होगी।

2. सरलता व सादगी :– सादगी सदाचार की जननी है और श्रृंगार व्यभिचार का दूत। जीवन में सदा सादगी और उत्तम विचारों को अपनाते हुए उच्च आदर्शों को प्राप्त किया जा सकता है, अन्यथा नहीं। सादा रहन–सहन से जीवन में सात्विकता, पवित्रता, धार्मिकता का उदय होता है। सादा खानपान से तन व मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। सरलता जीवन में सदाचार व सद्व्यवहार को जन्म देती है। इसके विपरीत फैशन संसार की तड़क–भड़क, दिखावट, बनावट, झूठा अभिमान, अहंकार, असत्य व विलासिता को जीवन के अंग बना देता है। फैशन मनुष्य को व्यभिचार दुराचार भ्रष्टाचार व अत्याचार की ओर ले जाता है। झूठे ठाठ–बाट, 'खाओ पीयो मौज करो' वाली असभ्यता में पलने वाले लोग जीवन में कभी उच्चादर्शों को प्राप्त नहीं कर सकते, वे तो मनुष्य के सामान्य स्तर से भी गिर जाते हैं। आजकल की पश्चिमी बयार के चलते तो स्त्रियाँ ही क्या पुरुष भी इस फैशनरूपी दानव के पंजे में फंसते जा रहे हैं और अनैतिकता व चरित्रहीनता के गर्त में गिरते जा रहे हैं। अतः जीवन में आध्यात्मिकता, सुख शांति और आनन्द के लिए सादा रहन–सहन, सादा खानपान, सद्व्यवहार व सदाचार अति आवश्यक है।

3. सत्याचरण :– मन, वचन व कर्म से सत्य का पालन करना आध्यात्मिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। सब काम सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए तथा सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा तत्पर रहना चाहिए। सत्याचरण ही धर्म का मूल है जिस पर संसार का सारा व्यापार व व्यवहार टिका हुआ है। सत्य मार्ग पर चलकर ही हम उस सत्य स्वरूप, सर्वाधार, सर्वेश्वर को जान सकते हैं, किसी असत्य, प्रपंच या धोखे या अंधविश्वास के द्वारा नहीं। आरम्भ में तो असत्य, ठगी या धोखे से भी सफलता मिलती दिखाई देती है, परन्तु यह सफलता क्षणिक और अवास्तविक होती है। असत्य पर आधारित जीवन चलाने वाले लोग एक दिन जीवन की बाजी हार जाते हैं। सत्याचरण से मनुष्य का अन्तःकरण शुद्ध व पवित्र हो जाता है और शुद्ध व पवित्र अंतःकरण ही परमपवित्र प्रभु का निवास स्थल है। अतः सत्य प्रकाश स्वरूप परमात्मा सत्याचरण करने वालों का ही सहायक होता है, अन्यों का नहीं। परमेश्वर पूर्णतः सत्य है।

4. सकारात्मक दृष्टिकोण :– सकारात्मक दृष्टिकोण से तात्पर्य है – जीवन में सदा शुभ कल्याणकारी संकल्प विकल्प, शुभ विचार व शुभ भावी भावनाएं बनाए रखना। आत्मा व परमात्मा में दृढ़ विश्वासी होना ही सकारात्मक जीवन दृष्टि है। परमात्मा ही सारे जगत् का उत्पत्तिकर्ता, कर्ता धर्ता व संहर्ता है। वह अत्यन्त मंगलरूप व कल्याणकारी है। वह जो कुछ करता है, सब शुभ ही करता है। वह हम जीवात्माओं का परम हितकारक है। अतः हम नकारात्मक व अशुभ विचारों को महत्त्वहीन, निराधार व निरर्थक समझकर सदा छोड़ दें। नकारात्मक दृष्टि वाले लोग नास्तिक, विभिन्न आशंकाओं से ग्रस्त, भयभीत, आलसी व प्रमादी होकर दुःख भोगते हैं। ऐसे लोग विद्वानों व महात्माओं में भी दोष ढूंढ़ते रहते हैं और उनके सद्गुणों से भी वंचित रह जाते हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण वाला मनुष्य सदा आशावान बना रहता है। ईश्वर कृपा से सब शुभ होगा, अच्छा ही होगा, ऐसा विचार जीवन के हर क्षेत्र में बना रहता है और वह निर्भय निःशंक, उत्साही व पुरुषार्थी होकर हर कार्य में सफलता प्राप्त करता है। जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण आध्यात्मिक उन्नति के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण गुण है।

5. समता व समानता :– परमेश्वर के न्याय नियम अनुसार मनुष्य जीवन में सुख वा दुःख दोनों ही आते

रहते हैं। कभी–कभी लगता है जीवन में दुःख अधिक है, सुख कम, परन्तु यह सत्य नहीं। आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए यह आवश्यक है कि हम सुख–दुःख, हर्ष–शोक, मान–अपमान, हानि–लाभ में समता का भाव रखें और द्वन्द्वों के प्रभाव से ऊपर उठें। जब जीवन में सुख आवें तो हम नाचें नहीं और जब दुःख आवें तो रोएं नहीं। यही समता का भाव है। दोनों अवस्थाओं में समान विचार रखना समतायोग कहलाता है। जितना हम अपने सुख को खींचकर लंबा कर देंगे, हमारा दुःख भी खिंचकर उतना ही लंबा हो जायेगा। अतः अतिवाद से सदा बचो। सुख आवे तो प्रभु का धन्यवाद करो और दुःख आवे तो प्रभु को याद करो, उससे सहनशक्ति व सामर्थ्य के लिए प्रार्थना करो। यही आध्यात्मिक जीवन का लक्षण है। जीवन में समता का अभ्यास एक बड़ा तप है, जिसका परिणाम सदा सुखद व अनुकरणीय है। ऐसा करने से मनुष्य बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी विचलित नहीं होता।

6. संतोष सुख :– संतोष जीवन का सबसे बड़ा धन है जो मनुष्य को सुख व आनन्द की प्राप्ति कराता है। संतोषी परमसुखी होता है और असंतोषी परम निर्धन। इस जीवन में मुझे जो कुछ भी मिला है, उस प्रभु की कृपा से मिला है। जितना भी प्रभु ने दिया है, मेरे लिए पर्याप्त है। प्रभु ने मुझे जीवन में बहुत कुछ दिया है और दिये जा रहे हैं। मैं इसके लिए उसका बार–बार धन्यवाद करता हूँ। ऐसा विचार जीवन में सदा बनाये रखें। तृष्णा का त्याग ही संतोष है। 'और और' की हाय–हाय मनुष्य को मृत्युपर्यन्त दुःखी रखती है। एक इच्छा के पूरा होने पर दूसरी इच्छा तीव्र गति से सिर उठाकर सामने आ खड़ी होती है और मनुष्य इन इच्छाओं के जाल से कभी निकल नहीं पाता और सदा दुःख सागर में ही गोते खाता–खाता इस संसार से विदा हो जाता है। जो मनुष्य अपनी इच्छाओं और अनावश्यकताओं पर अंकुश नहीं लगा पाता तथा संयम और समझदारी से काम नहीं लेता वह अन्ततः झूठ, भ्रष्टाचार, लूटपाट, चोरी डकैती पर उतारू हो जाता है। तृष्णा ही अनेकानेक बुराईयों, दुर्गुणों, दुर्व्यसनों व दुःखों की माँ है। आध्यात्मिक जीवन जीने वाला मनुष्य इस तृष्णा को संतोषरूपी कुल्हाड़ी से काटकर नष्ट कर देता है। वह अपने लिए आगे सुख का मार्ग प्रशस्त कर लेता है।

7. स्वाध्याय :– स्व का अर्थ है अपना और अध्याय का अर्थ है – अध्ययन। इस प्रकार स्वाध्याय का अर्थ हुआ – अपने आपको पढ़ना व जानना या पहचानना। कैसे जानें? आत्मा व परमात्मा का बोध कराने वाली विद्या को पढ़ें। वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना, सुनना–सुनाना और उसके अनुसार आचरण करना स्वाध्याय कहलाता है। संसार में सभी मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि कर सुख व आनन्द को भोगना चाहते हैं। इनकी प्राप्ति का सत्यज्ञान वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि सद्ग्रंथों के अध्ययन से ही मिलता है। इनमें परमात्मा, जीव और प्रकृति का शुद्ध ज्ञान भरा पड़ा है। अकेलेपन और दुःख की घड़ियों में एक स्वाध्याय ही मनुष्य का सच्चा साथ निभाता है। परमपिता परमात्मा ओ३म् का जप, भजन, चिन्तन, मनन व गुरुमंत्र गायत्री, महामृत्युंजय मंत्र व ईश्वरस्तुति प्रार्थना उपासना आदि आदि मंत्रों की अर्थ विचार सहित पुनरावृत्ति भी स्वाध्याय के अन्तर्गत ही आता हैं। स्वाध्यायशील मनुष्य का सम्बन्ध अपने उपास्य, आराध्य व इष्टदेव से शीघ्र जुड़ जाता है और उसके दोष, दुर्गुण व भ्रम दूर होकर शीघ्र अपने ध्येय पर पहुँच जाता है। निरन्तर व नियमित स्वाध्याय आध्यात्मिक जीवन की आधारशिला है जो मनुष्य को सत्यज्ञान और ज्ञान सहित भक्ति के द्वारा ईश्वर प्राप्ति की ओर अग्रसर व उत्साहित करता है। वेद का आदेश व निर्देश है कि साधक जन स्वाध्याय में कभी आलस्य व प्रमाद न करें और सदा स्वाध्याय को नित्यकर्म की भांति निभाएं।

8. सत्संगति :– स्वाध्याय की भांति ही सत्संगति सत्पुरुषों का संग भी आध्यात्मिक उन्नति के लिए परम आवश्यक है। वैदिक सत्संगों उत्सवों व शिविर आदि में दूर–दूर से विद्वान् लोग आते हैं, उनके उपदेश व प्रवचन सुनने से ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान व अनुभव थोड़े समय में ही उपलब्ध हो जाता है। उनका जीवन सात्विकता, धार्मिकता व आध्यात्मिकता का एक उदाहरण होता है, जो साधक के लिए आदर्श का काम करता है। सत्संगति और परस्पर विचार–विमर्श से कई आशंकाएं, भांतियाँ और गलत धारणाएं दूर हो जाती हैं। अतः वैदिक विचार वाले आर्य सज्जन विद्वान् व स्वाध्यायशील साधक यदि आपसे थोड़ा दूर भी रहते हों, तो परस्पर नियमित सत्संगति दोनों के लिए अतिलाभदायक है। ईश्वर भक्ति, स्तुति प्रार्थना आदि के भजन नियमित रूप से सुनना सुनाना भी सत्संगति ही है। इससे साधना का निरन्तर प्रवाह साधक के जीवन में बना रहता है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे हमें शक्ति सामर्थ्य व सद्बुद्धि दें जिससे कि हम अपने जीवन में ईश्वर उपासना, सरलता व सादगी, सत्याचरण, समता, सकारात्मक दृष्टिकोण, संतोष, स्वाध्याय व सत्संगति को अपनाएं और एक आदर्श आध्यात्मिक जीवन जीने में सफल हो सकें।

जीवन को स्वर्ग कैसे बनायें?

– वैद्य राजेन्द्र साह

1. यदि आप अपने माता-पिता का आदर करेंगे तो आपके बच्चे भी आपका आदर करना सीखेंगे।

2. दूसरे मनुष्यों से जैसा व्यवहार आप अपने लिए पसन्द करते हैं वैसा ही व्यवहार यदि आप दूसरों के साथ करें तो आपका जीवन बदलकर स्वर्ग बन सकता है। सामने वाले के स्थान पर अपने को रखकर जरा सोचने की आदत डालें कि यदि ''मैं उसकी जगह होता तो क्या करता?'' तो बहुत सी विकट समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा और साथ ही अनावश्यक तनाव से मुक्ति भी मिलेगी।

3. किसी को भी बिना मांगे और अनावश्यक सलाह देने और बात-बात पर टोकने की आदत त्याग दें। इस तरीके से किसी व्यक्ति, चाहे बच्चा हो या बड़ा, में सुधार लाने की आशा करना व्यर्थ है। जीवन में सुधार लाने के लिए प्रकृति, सत्संगति, महापुरुषों का जीवन और श्रेष्ठ लेखकों की प्रेरणादायक पुस्तकें ही वास्तविक प्रेरणा स्रोत हैं।

4. जैसा मधुर व्यवहार विवाह से पहले प्रेमी-प्रेमिका के मध्य देखा जाता है, वैसा ही व्यवहार प्रेमी-प्रेमिकावत् व्यवहार, एक-दूसरे को समझने की भावना और परस्पर तालमेल का विवाह के बाद जीवन में किया जाये तो पति-पत्नी का वैवाहिक जीवन वास्तव में आनन्ददायक बन सकता है। फिर भला दाम्पत्य जीवन में कटुता और क्लेश का स्थान कहाँ?

5. 'क्या खाते हैं' इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, जितना कि खाये हुए आहार को ठीक से पचाना। अतः जो आहार आप ठीक से पचा न सकें उसका सेवन न करें और जो खाद्य पदार्थ आपको अनुकूल न आता हो, उसका सेवन त्याग देना चाहिए। इसी प्रकार क्या कमाते हैं? इससे अधिक महत्त्वपूर्ण है कि आप अपनी आय को विवेक और बुद्धिमता से कितना खर्चते हैं।

6. दूसरों की बढ़ोतरी से अपना मिलान या कम्पेरिजन करके दुःखी मत होइए और न ही व्यर्थ प्रतिस्पर्धा में उतरकर होश खोइए। प्रतिस्पर्धा का कहीं अन्त नहीं है। ईर्ष्या और दूसरों को सुखी देखकर दुःखी होने का स्वभाव मानसिक तनाव और अनेकानेक रोगों का कारण बनता है, जबकि दूसरों को सुखी देखकर आनन्दित होने का मजा अपने आप में किसी स्वर्गिक सुख से कम नहीं है।

अपने जीवन रूपी 'आधी भरी, आधी खाली गिलास' के आधे खाली भाग को देखकर और अपनी उपलब्धियों को नजरअन्दाज करके व्यर्थ में दुःखी मत होइए। 'जो पास नहीं है' उसे देखकर निराश होने की बजाए 'जो पास में है' उसको देखकर आप सदा आशावादिता के साथ खुशियाँ बटोरिए। सदा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाइए। 'जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि'।

इस सृष्टि में सभी समान नहीं हो सकते। यहाँ तक कि एक ही माँ की कोख से उत्पन्न भाई-बहन में भी प्रत्येक का अपना एक अलग व्यक्तित्व है। यह भेद जन्म-जन्मान्तर के शुभाशुभ कर्मों का प्रतिफल है। कर्मवाद सद्कर्मों की प्रेरणा देता है और सप्त-व्यसनों से बचाता है। जैसा कोई कर्म करेगा वैसा ही उसे फल मिलेगा। अच्छे कर्मों के द्वारा इस जीवन और अगले जन्म को निखारना आपके अपने हाथ में है। महाभारत में भगवान् श्रीकृष्ण ने फल की कामना किए बिना, अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दी है :-

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'

इस मर्म को समझने के बाद बहुत से मानसिक तनावों से सहज ही मुक्ति मिल जाती है और कर्त्तव्य परायणता का पथ प्रशस्त हो जाता है।

7. 'सादा जीवन, उच्च विचार' के अपनाने से जहाँ आत्मा चमकती है वहाँ फैशनपरस्ती और कुत्सित विचारों से आत्मा मलीन होती है। हमारी संस्कृति आत्मोन्मुखी होने से आत्मा प्रधान है। यहाँ व्यक्ति के चरित्र और गुणों की पूजा होती है शरीर और शरीर पर धारण किए गए वस्त्र आभूषणों या उनके नकल (फैशन) की नहीं।

आवश्यकताओं को कम करने में ही सच्चा सुख छिपा है। चाह घटाने से चिन्ताओं से मुक्ति मिलती है। किसी ने सच कहा है :-

चाह गई, चिन्ता मिटी, मनुवा बेपरवाह।
जिसको कुछ नहीं चाहिए, वह है शहन्शाह।।

8. सभी धर्म, देवी-देवता, आस्थाएँ, पूजा-पद्धतियों का हमें सम्मान करना चाहिए, क्योंकि ये सब केवल माध्यम अथवा मार्ग हैं- एकमात्र लक्ष्य परमात्मा तक पहुँचने के लिए। जिस प्रकार अनेक नदियों और जल-धाराओं के जल का एकमात्र लक्ष्य आगे जाकर अन्त में विशाल सागर में विलीन होकर उस सागर से एकाकार हो जाना है, उसी प्रकार समस्त धर्म, देवी-देवता, आस्थाएँ और उनसे जुड़ी पूजा-पद्धतियों के उपासक का अन्तिम लक्ष्य भी आगे जाकर अन्त में परमात्मा की प्राप्ति ही है।

'सर्वधर्मसम्मानभाव' इतनी सी बात ठीक से समझकर जीवन में आचरण में लाई जाये तो साम्प्रदायिकता का नामोनिशान न रहेगा और इंसानियत जागेगी जिससे हमारा जीवन स्वर्ग बन जायेगा।

9. किसी भी भारतीय को किसी के आगे नतमस्तक होने की जरूरत नहीं है क्योंकि हमारी संस्कृति महान् है, जो कि श्रीराम, श्रीकृष्ण, ज्ञानी महावीर, महात्मा बुद्ध, गुरुनानक, महर्षि दयानन्द जैसे धर्मनायकों द्वारा स्थापित महान् मानवीय मूल्यों और आदर्शों पर आधारित है। यथा - 'सादा जीवन, उच्च विचार', ब्रह्मचर्य, शाकाहार, सर्वधर्मसम्मानभाव, सभी देवी-देवताओं के प्रति सम्मान, नारी के प्रति सम्मान, माता-पिता बुजुर्गों के प्रति सम्मान, सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा की भावना, क्षमा, करुणा, सत्य, अस्तेय, समन्वयवाद, कर्मवाद, संतोष, दान, शील, तप, त्याग, समर्पण, प्रेम, भाईचारा इत्यादि पर है, जो सर्वधर्म सहिष्णुता, अनेकता में एकता, सह-अस्तित्व, 'जीओ और जीने दो' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सन्देश देती है। आज विरासत में मिली मानवीय मूल्यों की ऊँचाई को छूने वाली इसी संस्कृति के कारण हमारा सिर सदैव ऊँचा रहा है और इसी से हमारा देश महान् है। भारत के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना और उन्हें जीवन में उतारना हमारा परम धर्म है। यह लेख डॉ. अजीत मेहता जी द्वारा लिखित ''स्वदेशी चिकित्सा सार'' पर आधारित है।

- ग्राम. पो.-सरैया बाजार, वाया-पारू, जिला-मुजफ्फरपुर (बिहार)-843112

पृष्ठ 2 का शेष

आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की उपयोगिता

कुटुम्बकम्' तथा 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्', मानव व प्रकृति के सुन्दर, स्वस्थ पर्यावरण के लिए 'द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः', राष्ट्रैक्य के लिए 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी', 'अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी' आदि निर्देश महत्त्वपूर्ण हैं। संसदभवन में 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय', डाकतार वाहनों पर 'अहर्निशं सेवामहे' जीवन बीमा निगम में 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' शिक्षा संस्थानों में विद्ययाऽमृतमश्नुते ''निष्ठा धृतिः सत्यम् तमसो मा ज्योतिर्गमय' आदि सारगर्भित वाक्य आधुनिक वैश्वीकरण में संस्कृत की सर्वप्रचलित उपयुक्तता को ही प्रमाणित करते हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि संस्कृत एकविषयात्मिक नहीं है। यह विविध विषयों की शृंखला है। यदि आज के पाठ्यक्रम में संस्कृत निबद्ध तत्-तत् अंश विभिन्न विषयों में निर्धारित कर दिये जायें तो भारत का ही नहीं, विश्व का प्रत्येक नागरिक अपने अतीत को अधिक समझ पायेगा, वर्तमान में विशेष सन्तुलित व्यवहार कर पायेगा और अपने भविष्य के प्रति उल्लसित होकर उचित आचरण कर पायेगा। वैश्वीकरण के सन्दर्भ में यह नितान्त अनिवार्य है कि संस्कृत की विषय श्रृंखला विविध विषयों से सुसम्बद्ध हो पाये। राजनीति में कौटिल्यशास्त्र की, कानून में मनुस्मृति की, आयुर्वेद में चरक व सुश्रुत संहिता की अनिवार्यता विषयों को तत्वतः जानने में सहायक भी होगी और उपयोगी भी। वाणिज्य व व्यावसायिक प्रबन्धन भी संस्कृत निष्ठा होने पर विशेष सुभग बन सकता है। चेतना, नैतिक मूल्याङ्कन, सदसंकल्प व परिश्रम आज के प्रबन्धन की कड़ियाँ हैं।

उपनिषदों में प्रतिपादित आत्मदर्शन ;प्दजतवेचमबजपवदद्ध आत्मश्रवण (अपने दोषों को सुनने की सामर्थ्य) और आत्मनिदिध्यासन ै;मसप ।दंसलेपेद्ध वैश्वीकरण के इस युग में मानव को सद्-दृष्टि देने में सक्षम हैं। आज इसी आत्मदर्शन, आत्मश्रवण और आत्मनिदिध्यासन की आवश्यकता है।

आज की मानवता अलगाव और अकेलेपन की मर्मान्तक पीड़ा से सन्त्रस्त है। संस्कार प्रधान संस्कृति आज की अनिवार्यता है। विनय, आदर, वृद्धसेवा आज की पुकार है। सुसंस्कृत व्यवहार और आचरण जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। यह तथ्य यदि आज की पीढ़ी समझ पाये तो व्सक ।हम भ्वउमे की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आधुनिक सभ्यता से पीड़ित और उपेक्षित वृद्ध भी अपने-अपने परिवारों में सुखद जीवन बिता सकेंगे और 'पश्येम शरदः शतम्, जीवेम शरदः शतम्, अदीनाः स्याम् शरदः शतम्' को सार्थक कर पायेंगे।

वैश्वीकरण के युग में संस्कृत की उपयुक्तता इस तथ्य में भी निहित है कि संस्कृतनिष्ठ व्यक्ति किसी भी विकट स्थिति से सहजता से उभर सकता है। गीता की स्थितप्रज्ञता, उपनिषदों का आध्यात्मिक ज्ञान, वेदों का शुभसंकल्प उसे आश्वस्त कर उसकी राहों के दीपस्तम्भ बन उपस्थित होते हैं। सत्यं शिवं सुन्दरं की अजस्र धारा निरन्तर सिंचित करती उसे पल्लवित और विकसित करती हैं।

आशा करती हूँ कि वैश्वीकरण के इस दौर में संस्कृति के सकारात्मक चिन्तन की दीपशिखा निरन्तर जगमगाती रहे। दीप से दीप प्रज्ज्वलित होता रहे, लोक कल्याण की सुरभि चहुँदिक् महकती रहे। मेरा मानना है कि संस्कृत वह चिराग है जो हकीकत है - सच्चाई है। वह रोशनी है जो हमारी मायूसियों से मद्धम हुए चिरागों को रोशन करती है। वह जीवन तत्व है जो हमें भाव, विचार और अभिव्यक्ति का उचित अनुपात सिखाती है। जियो और जीने दो का पाठ पढ़ाती है हमें इस योग्य बना देती है कि हम किसी के फटे लिबास को टांक सकें, किसी के मन की आबरू बन सकें। संस्कृत वस्तुतः अमृत की बूँदें हैं। आब-ए-हयात के कुछ कतरे हैं। संस्कृत वह शाश्वत चिन्तन है जो अहसास कराता है हम कौन थे, हम क्या हैं और क्या होंगे अभी। आज के वैश्वीकरण परिवेश में संस्कृत मानो मानव को कह रही है :-

खुशबू हूँ मैं, फूल नहीं हूँ जो मुरझा जाऊँगी,
ममता का आंचल बन के तुम को लोरी सुनाऊँगी
मेरे गीत सहारा देंगे मीत बन कर सहलाऊँगी
अनदेखा तारा बन करके राह मैं तुम्हें दिखाऊँगी।

श्री सेवतीलाल आर्य जी का आकस्मिक निधन

महर्षि दयानन्द सेवा समिति, आर्य समाज हिम्मतपुर, काकामई, जनपद–एटा (उ. प्र.) के संस्थापक अध्यक्ष श्री सेवतीलाल आर्य जी का दिनांक 24 नवम्बर, 2024 को आकस्मिक निधन हो गया। महर्षि दयानन्द सेवा समिति, आर्य समाज हिम्मतपुर काकामई के संस्थापक अध्यक्ष, सम्माननीय श्री सेवतीलाल आर्य जी (निवासी : ग्राम पटनी, जनपद एटा) का पूरा जीवन सत्य, धर्म और समाजसेवा के प्रति समर्पित रहा। आर्य समाज की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने में उन्होंने अविस्मरणीय योगदान दिया। वे समाज के उत्थान और प्रगति के लिए निःस्वार्थ भाव से कार्य करते हुए अपना जीवनयापन किया। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त सादगी भरा रहा। ऐसे कर्मठ व्यक्तित्व का हम सबके बीच से अचानक चले जाना निःसंदेह आर्य समाज तथा उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है। सार्वदेशिक सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिकजनों और सगे–सम्बन्धियों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2024-26
Licence to Post without Pre-Payment of Postage. U (C)-289/2024-26

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

महिला सशक्तिकरण का विचार महर्षि दयानन्द ने दिया था – डॉ. प्रीति विमर्शिनी

कर्मकाण्ड तक सीमित न हो यज्ञ – दीनानाथ शास्त्री

संसार में वेद एवं वैदिक मान्यताएं ही सनातन हैं अन्य नहीं – आचार्य विष्णुमित्र

का आयोजन किया गया, जिसका संचालन "वेद श्रीः" डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री एवं 'वेद श्रीः' पंडित दीनानाथ शास्त्री जी ने किया। जिसकी अध्यक्षता 'वेद श्री" स्वामी आर्यवेश जी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री ओम प्रकाश आर्य (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली) जी उपस्थित रहे। इस अवसर पर तेलंगाना से पधारे वैदिक संयासी स्वामी चिदानंद सरस्वती, आचार्या डॉ. प्रीती 'विमर्शिनी', एवं आचार्य विष्णु मित्र 'वेदार्थी' जी को "वेद श्रीः" अलंकरण से विभूषित किया गया।

15 नवम्बर, 2024 को प्रथम सत्र में यज्ञ की पूर्णाहुति, भजनोपदेश एवं आध्यात्मिक प्रवचन के पश्चात द्वितीय सत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती वर्ष पर दोपहर 1 बजे से सायं 3 बजे तक विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गये, जिसमें आर्य कन्या इंटर कालेज की अध्यापिका श्रीमती सपना व सुश्री अंजली एवं डी. ए. वी. एकेडमी टाण्डा की अध्यापिका श्रीमती गुरमीत कौर व सुश्री शिल्पा जी के निर्देशन में विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने अत्यन्त सुन्दर, मनमोहक व महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जीवन चरित्र को उद्धृत करते हुए लघु नाटिका का जीवंत मंचन किया।

आयोजन के अंतिम सत्र में "महर्षि दयानंद सरस्वती जी का वैश्विक योगदान" विषय पर उपस्थित विद्वानों का सुंदर उपदेश हुआ। आर्य समाज टाण्डा के उप–प्रधान श्री वीरेंद्र कुमार आर्य जी ने सम्पूर्ण आयोजन के कर्ता–धर्ता यशस्वी प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य जी सहित सभी के प्रति आभार व्यक्त

किया। डॉ. कैलाश चंद्र 'कर्मठ' जी के भजनोपदेश के पश्चात रात्रि 10 बजे शान्ति पाठ के साथ चार दिवसीय वार्षिकोत्सव का समापन किया गया।

उप प्रधान श्री वीरेंद्र कुमार आर्य, मंत्री श्री योगेश कुमार आर्य, उप मंत्री श्री सत्य प्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री संजीव जायसवाल, सम्पूर्ण कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अरुण कुमार आर्य, श्री चंद्रगुप्त मौर्य, महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला देवी, मंत्राणी श्रीमती किरन बाला आर्या, श्रीमती सीमा देवी, श्रीमती तरंगिणी देवी, आदि आर्य समाज के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने तन–मन–धन से सहयोग करते हुए आयोजन को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलटू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।